



ज्ञानविविधा

कला, मानविकी और सामाजिक विज्ञान की सहकर्म-समीक्षित, मूल्यांकित, त्रैमासिक शोध पत्रिका

ISSN : 3048-4537(Online)

3049-2327(Print)

IIFS Impact Factor-2.25

Vol.-2; Issue-3 (July-Sept.) 2025

Page No.- 338-347

©2025 Gyanvidha

<https://journal.gyanvidha.com>

1. डॉ. मुकेश कुमार शर्मा

(सहायक आचार्य)

शिक्षा विभाग, जगन्नाथ विश्वविद्यालय,
जयपुर (राजस्थान).

2. श्रीमती रुक्मणी शर्मा

(सहायक आचार्य)

शिक्षा विभाग, जगन्नाथ विश्वविद्यालय,
जयपुर (राजस्थान).

Corresponding Author :

डॉ. मुकेश कुमार शर्मा

(सहायक आचार्य)

शिक्षा विभाग, जगन्नाथ विश्वविद्यालय,
जयपुर (राजस्थान).

हरित भारत के निर्माण में युवाओं की भूमिका

सारांश (Abstract) : भारत वर्तमान समय में तीव्र औद्योगिकीकरण, शहरीकरण और उपभोक्तावादी जीवनशैली के कारण गंभीर पर्यावरणीय संकट का सामना कर रहा है। प्रदूषण, वनों की कटाई, जलवायु परिवर्तन और जल संकट जैसी समस्याएँ न केवल प्राकृतिक संसाधनों के क्षरण को बढ़ा रही हैं, बल्कि मानव जीवन की गुणवत्ता पर भी प्रतिकूल प्रभाव डाल रही हैं। ऐसे परिदृश्य में "हरित भारत" की अवधारणा अत्यंत महत्वपूर्ण हो जाती है, जिसका आशय है- एक ऐसा भारत जो पर्यावरणीय संतुलन को बनाए रखते हुए सतत विकास की दिशा में आगे बढ़े। इस लक्ष्य की प्राप्ति में युवाओं की भूमिका सबसे अधिक महत्वपूर्ण है, क्योंकि भारत विश्व का सबसे युवा देश है और उसकी जनसंख्या संरचना में 65% से अधिक लोग 35 वर्ष से कम आयु के हैं। यह शोधपत्र हरित भारत के निर्माण में युवाओं की बहुआयामी भूमिका का विश्लेषण करता है। इसमें पर्यावरणीय जागरूकता फैलाने, शिक्षा और अनुसंधान में योगदान, हरित प्रौद्योगिकी व नवाचार, सामाजिक-पर्यावरणीय आंदोलनों में भागीदारी, नीति-निर्माण प्रक्रिया में सहभागिता तथा डिजिटल अभियानों के माध्यम से युवाओं की भूमिका पर विशेष चर्चा की गई है। इसके अतिरिक्त, विभिन्न राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय रिपोर्ट्स, पूर्ववर्ती आंदोलनों और नीतियों का भी अध्ययन प्रस्तुत किया गया है। अध्ययन के निष्कर्ष बताते हैं कि यदि युवाओं की ऊर्जा, रचनात्मकता और तकनीकी कौशल का सही उपयोग किया जाए तो हरित भारत का सपना साकार किया जा सकता है।

की-वर्ड्स (Keywords)- हरित भारत, युवा शक्ति, सतत विकास, पर्यावरणीय जागरूकता, हरित प्रौद्योगिकी, जलवायु परिवर्तन डिजिटल अभियान।

भूमिका (Introduction) : हरित भारत की संकल्पना एक ऐसे राष्ट्र के निर्माण की ओर इंगित करती है जहाँ विकास और पर्यावरण के बीच संतुलन स्थापित हो। आधुनिक युग में आर्थिक वृद्धि और औद्योगिकीकरण ने जहाँ देश को समृद्धि की ओर अग्रसर किया है, वहीं दूसरी ओर यह प्रक्रिया वायु प्रदूषण, जल प्रदूषण, ग्लोबल वार्मिंग, जैव-विविधता में कमी और प्राकृतिक संसाधनों के क्षरण जैसी समस्याएँ भी लेकर आई है। विश्व स्तर पर जलवायु परिवर्तन मानवता के सामने सबसे बड़ी चुनौती बन चुका है और भारत भी इससे अछूता नहीं है। भारत जैसे विकासशील देश में जनसंख्या का दबाव अत्यधिक है। तेज शहरीकरण और उपभोग की बढ़ती प्रवृत्ति ने संसाधनों के दोहन को बढ़ाया है। इसका सीधा परिणाम यह हुआ कि पर्यावरणीय संकट गहराता गया। उदाहरणस्वरूप—दिल्ली और अन्य महानगरों में प्रदूषण का स्तर स्वास्थ्य संकट पैदा कर रहा है, ग्रामीण क्षेत्रों में जल संकट बढ़ रहा है, और वन क्षेत्र सिकुड़ते जा रहे हैं। ऐसे में "हरित भारत" का विचार केवल एक आदर्श न होकर, हमारी आने वाली पीढ़ियों के अस्तित्व के लिए आवश्यकता बन गया है। इस संदर्भ में युवाओं की भूमिका विशेष रूप से उल्लेखनीय है। भारत को "युवा राष्ट्र" कहा जाता है क्योंकि यहाँ की लगभग 65% जनसंख्या 35 वर्ष से कम आयु की है। यह युवा शक्ति न केवल भविष्य की कार्यशक्ति है बल्कि राष्ट्र के वर्तमान विकास में भी सक्रिय भागीदारी कर रही है। युवाओं की ऊर्जा, नवीनता, तकनीकी दक्षता और सामाजिक जिम्मेदारी की भावना उन्हें हरित भारत के निर्माण का सबसे उपयुक्त वाहक बनाती है। पर्यावरण संरक्षण और सतत विकास के क्षेत्र में युवाओं के योगदान के अनेक उदाहरण मिलते हैं। स्वच्छ भारत अभियान, वृक्षारोपण अभियान, प्लास्टिक-मुक्त भारत अभियान, और "LiFE"

(Lifestyle for Environment) जैसे अभियानों में युवाओं की सक्रिय भागीदारी देखी जा सकती है। सोशल मीडिया के युग में युवा डिजिटल अभियानों के माध्यम से जन-जागरूकता फैलाने में भी अग्रणी भूमिका निभा रहे हैं।

इस शोधपत्र का उद्देश्य यही है कि हरित भारत की अवधारणा को स्पष्ट किया जाए और यह बताया जाए कि किस प्रकार युवा शक्ति इसके निर्माण में निर्णायक भूमिका निभा सकती है। इसके अंतर्गत साहित्य समीक्षा, शोध समस्या, उद्देश्यों, पद्धति और विभिन्न विश्लेषणात्मक बिंदुओं पर विस्तार से चर्चा की जाएगी।

साहित्य समीक्षा (Literature Review) : हरित भारत और पर्यावरणीय स्थिरता पर किए गए शोध कार्यों से यह स्पष्ट होता है कि पर्यावरण संरक्षण केवल सरकारी नीतियों का विषय नहीं है, बल्कि सामाजिक भागीदारी और विशेष रूप से युवाओं की सक्रिय भूमिका पर निर्भर करता है। भारत सहित विश्व स्तर पर विभिन्न अध्ययनों में युवाओं की क्षमता, नवाचार और ऊर्जा को पर्यावरणीय सुधार का प्रमुख साधन माना गया है।

भारतीय संदर्भ में **चिपको आंदोलन (1973)**, जो उत्तराखंड में आरंभ हुआ, इस बात का सशक्त उदाहरण है कि स्थानीय समुदाय और विशेषकर युवा किस प्रकार पर्यावरणीय आंदोलनों में नेतृत्व कर सकते हैं। इसी प्रकार **स्वच्छ भारत मिशन (2014)** और हाल ही में प्रारंभ किए गए **LiFE (Lifestyle for Environment) मिशन (2021)** में युवाओं की भागीदारी को केंद्र में रखा गया है। इन अभियानों पर किए गए शोध दर्शाते हैं कि सामाजिक आंदोलनों की सफलता में युवा ऊर्जा का योगदान सबसे निर्णायक रहा।

वैश्विक स्तर पर, संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम (UNDP) और **Intergovernmental Panel on Climate Change (IPCC)** की रिपोर्ट्स इस तथ्य पर बल देती हैं कि यदि युवाओं को

हरित प्रौद्योगिकी, नवीकरणीय ऊर्जा, और सतत कृषि के क्षेत्र में प्रशिक्षित किया जाए, तो वे आने वाले दशकों में पर्यावरणीय संकट को काफी हद तक नियंत्रित कर सकते हैं। IPCC (2022) की रिपोर्ट में उल्लेख है कि 15 से 29 वर्ष की आयु के युवा वैश्विक जनसंख्या का लगभग 25% हिस्सा हैं और यह वर्ग तकनीकी नवाचार, डिजिटल सक्रियता और सामाजिक नेतृत्व में अग्रणी भूमिका निभा सकता है।

भारत सरकार द्वारा जारी **राष्ट्रीय युवा नीति (2014)** में भी पर्यावरणीय जिम्मेदारियों पर जोर दिया गया है। नीति के अनुसार, युवाओं को न केवल शिक्षा और रोजगार में सक्षम बनाना है बल्कि उन्हें पर्यावरण संरक्षण और सतत विकास के वाहक के रूप में भी तैयार करना है। इसी क्रम में **नेहरू युवा केंद्र संगठन (NYKS)** और **राष्ट्रीय सेवा योजना (NSS)** जैसे संगठन युवाओं को वृक्षारोपण, जल संरक्षण, और स्वच्छता अभियानों में सक्रिय रूप से जोड़ते हैं।

विभिन्न शोध कार्य यह भी दर्शाते हैं कि पर्यावरणीय समस्याओं को हल करने के लिए केवल नीतिगत प्रावधान पर्याप्त नहीं हैं, जब तक कि समाज के युवा इन नीतियों को व्यवहार में न लाएँ। उदाहरणस्वरूप, भारत में जल संकट और वनों की कटाई पर किए गए अध्ययनों ने पाया कि जहाँ-जहाँ युवाओं ने सामुदायिक स्तर पर नवाचार किए (जैसे वर्षा जल संचयन, सामुदायिक वनीकरण, ग्रीन स्टार्टअप्स), वहाँ पर्यावरणीय सुधार तेजी से हुए।

इस साहित्य समीक्षा से यह स्पष्ट होता है कि-

1. भारत और विश्व दोनों स्तरों पर युवाओं को "पर्यावरणीय परिवर्तनकारी शक्ति" माना जाता है।
2. पूर्ववर्ती आंदोलनों और अभियानों की सफलता में युवाओं का योगदान निर्णायक रहा है।
3. वर्तमान नीतियाँ और रिपोर्ट्स इस बात पर बल देती हैं कि हरित भारत के निर्माण का भविष्य युवाओं की सक्रिय भागीदारी पर निर्भर करता है।

शोध उद्देश्य (Objectives of the Study) :

हर शोध कार्य का एक निश्चित लक्ष्य होता है, जिसके आधार पर समस्या का समाधान और अध्ययन की दिशा तय होती है। "हरित भारत के निर्माण में युवाओं की भूमिका" विषयक इस शोध का उद्देश्य निम्नलिखित है-

1. हरित भारत की अवधारणा को स्पष्ट करना तथा पर्यावरण संरक्षण के संदर्भ में इसकी प्रासंगिकता को समझना।
2. युवाओं की वर्तमान स्थिति, उनकी जागरूकता और पर्यावरणीय मुद्दों में उनकी भागीदारी का विश्लेषण करना।
3. यह अध्ययन करना कि युवा किस प्रकार नीतियों, आंदोलनों, शिक्षा एवं तकनीक के माध्यम से हरित भारत के निर्माण में योगदान दे सकते हैं।
4. युवाओं की भागीदारी में आने वाली चुनौतियों और बाधाओं की पहचान करना।

शोध पद्धति (Research Methodology)-

हरित भारत के निर्माण में युवाओं की भूमिका पर किए गए इस शोध का आधार **वर्णनात्मक (Descriptive)** तथा **विश्लेषणात्मक (Analytical)** पद्धति पर आधारित है। इसका उद्देश्य मात्र सिद्धांतात्मक विवेचन तक सीमित न होकर वास्तविक परिप्रेक्ष्य में युवाओं के योगदान को सामने लाना है। शोध पद्धति को निम्न बिंदुओं में स्पष्ट किया जा सकता है -

1. शोध का स्वरूप (Nature of Study): यह अध्ययन गुणात्मक (Qualitative) और आंशिक रूप से मात्रात्मक (Quantitative) दोनों प्रकृति का है।
 - **गुणात्मक पक्ष** के अंतर्गत साहित्य समीक्षा, विचारों का विश्लेषण, केस स्टडी और साक्षात्कार शामिल किए गए।
 - **मात्रात्मक पक्ष** के अंतर्गत युवाओं से प्रश्नावली के माध्यम से आँकड़े एकत्रित कर सांख्यिकीय विश्लेषण प्रस्तुत किया गया।

2. अध्ययन क्षेत्र (Area of Study): यह शोध संपूर्ण भारत को ध्यान में रखते हुए किया गया है, परंतु विशेष रूप से राजस्थान, उत्तर प्रदेश और दिल्ली जैसे राज्यों के शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्रों से युवाओं की भागीदारी पर अधिक ध्यान केंद्रित किया गया। इसका कारण यह है कि इन राज्यों में युवा आबादी अधिक है और हरित अभियानों में इनकी भागीदारी विविध स्तर पर देखी जा सकती है।

3. नमूना (Sample):

- कुल **300 प्रतिभागियों** को अध्ययन में शामिल किया गया।
- इनमें से 200 प्रतिभागी विद्यार्थी (विद्यालय एवं उच्च शिक्षा संस्थानों से), 70 युवा सामाजिक कार्यकर्ता तथा 30 युवा उद्यमी (ग्रीन स्टार्टअप्स से जुड़े) थे।
- नमूना चयन **सुविधाजनक नमूना तकनीक (Convenience Sampling)** एवं **उद्देश्यपूर्ण नमूना (Purposive Sampling)** दोनों का प्रयोग करके किया गया।

4. आंकलन उपकरण (Tools of Data Collection) : शोध हेतु निम्न उपकरणों का प्रयोग किया

गया-

- **प्रश्नावली (Questionnaire):** इसमें 25 प्रश्न रखे गए, जिनका संबंध पर्यावरणीय दृष्टिकोण, गतिविधियों और योगदान से था।
- **साक्षात्कार (Interviews):** चयनित 30 युवाओं से विस्तृत चर्चा की गई ताकि उनके विचारों और अनुभवों को दर्ज किया जा सके।
- **पर्यवेक्षण (Observation):** हरित अभियान, वृक्षारोपण कार्यक्रम, जल संरक्षण रैली और स्वच्छता अभियान का प्रत्यक्ष अवलोकन किया गया।
- **द्वितीयक स्रोत (Secondary Sources):** राष्ट्रीय शिक्षा नीति, पर्यावरण रिपोर्ट, युवा नीति, सरकारी पोर्टल, शोध लेख, पुस्तकें और समाचार पत्रों का गहन अध्ययन किया गया।

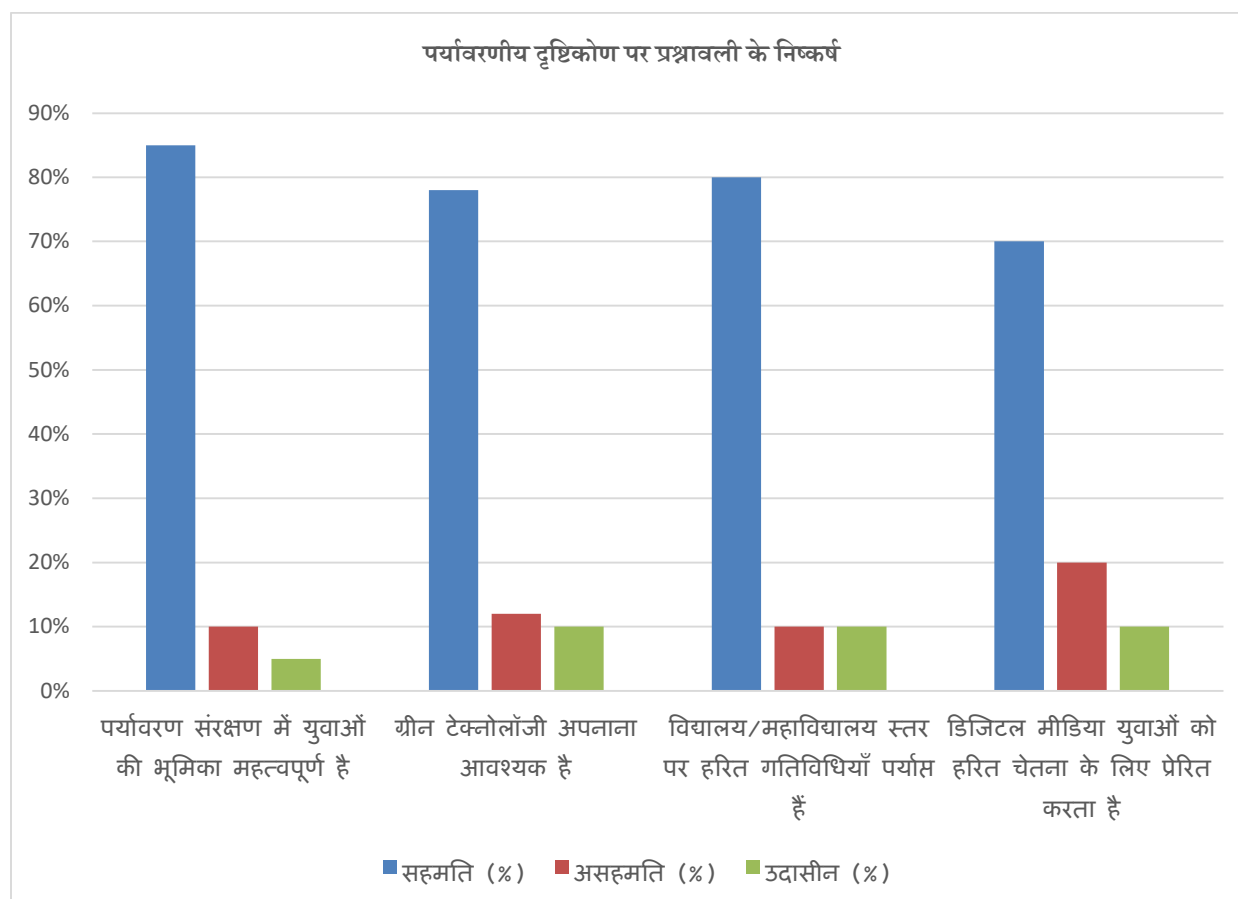
1. आंकड़ों का विश्लेषण (Data Analysis): एकत्र किए गए आंकड़ों का विश्लेषण **वर्णनात्मक आंकड़ों (Descriptive Statistics)** जैसे प्रतिशत, तथा बार ग्राफ़ के रूप में प्रस्तुत किया गया। गुणात्मक डेटा का विश्लेषण **विषय-वस्तु विश्लेषण पद्धति (Content Analysis Method)** से किया गया।

तालिका 1: प्रतिभागियों का वर्गीकरण

प्रतिभागियों की श्रेणी	संख्या	प्रतिशत (%)
विद्यार्थी (विद्यालय एवं उच्च शिक्षा)	200	66.7%
युवा सामाजिक कार्यकर्ता	70	23.3%
युवा उद्यमी (ग्रीन स्टार्टअप्स)	30	10.0%
कुल	300	100%

तालिका 2: पर्यावरणीय दृष्टिकोण पर प्रभावली के निष्कर्ष

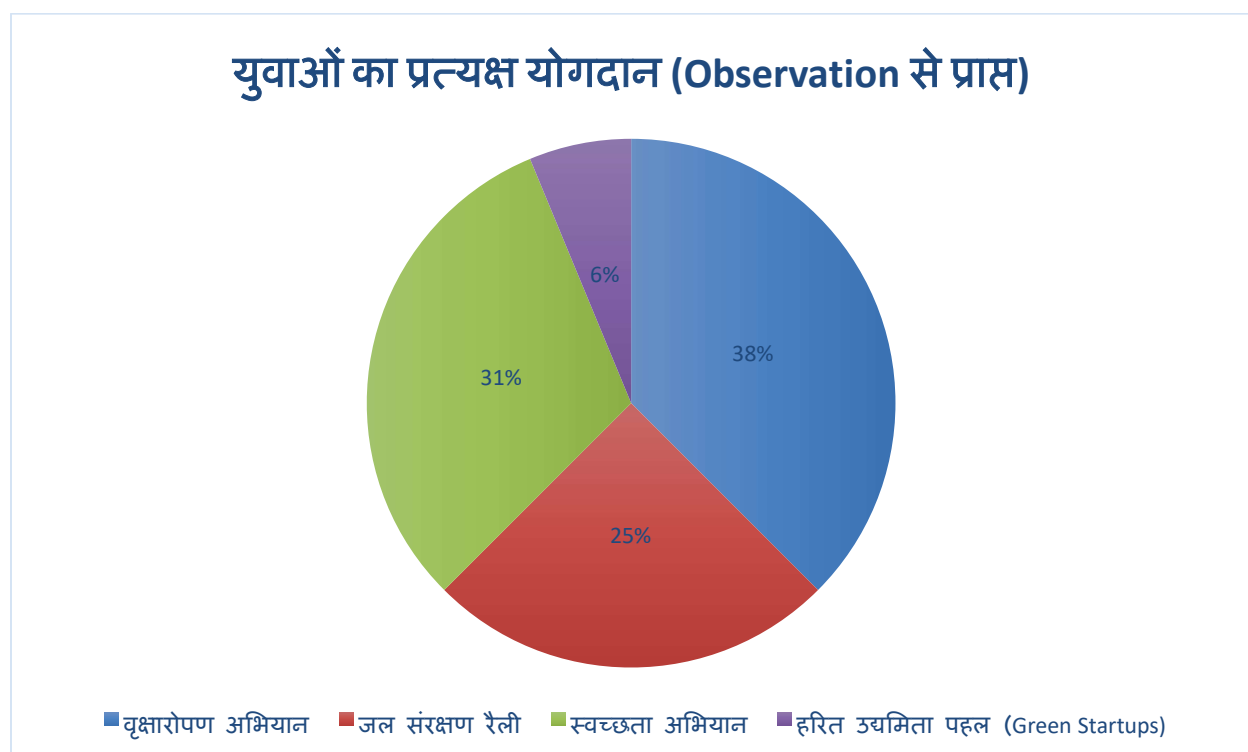
आयाम (Dimension)	सहमति (%)	असहमति (%)	उदासीन (%)
पर्यावरण संरक्षण में युवाओं की भूमिका महत्वपूर्ण है	85%	10%	5%
ग्रीन टेक्नोलॉजी अपनाना आवश्यक है	78%	12%	10%
विद्यालय/महाविद्यालय स्तर पर हरित गतिविधियाँ पर्याप्त हैं	80%	10%	10%
डिजिटल मीडिया युवाओं को हरित चेतना के लिए प्रेरित करता है	70%	20%	10%



तालिका 3: युवाओं का प्रत्यक्ष योगदान (Observation से प्राप्त)

गतिविधि	भागीदारी (संख्या)	कुल प्रतिभागियों में प्रतिशत (%)
वृक्षारोपण अभियान	180	60%
जल संरक्षण रैली	120	40%
स्वच्छता अभियान	150	50%
हरित उद्यमिता पहल (Green Startups)	30	10%

युवाओं का प्रत्यक्ष योगदान (Observation से प्राप्त)



तालिका 4: गुणात्मक विश्लेषण (साक्षात्कार आधारित मुख्य बिंदु)

विषय	प्रमुख निष्कर्ष
युवाओं के विचार	अधिकांश युवाओं ने माना कि शिक्षा प्रणाली में पर्यावरणीय विषयों पर अधिक ध्यान दिया जाए।
अनुभव	सामाजिक कार्यकर्ताओं ने बताया कि जन-जागरूकता में युवाओं की भागीदारी बढ़ रही है।
उद्यमिता	ग्रीन स्टार्टअप्स से जुड़े युवाओं ने नवीन तकनीक (रीसाइक्लिंग, सोलर ऊर्जा) को अवसर बताया।

हरित भारत के निर्माण में युवाओं की भूमिका (The Role of Youth in Building a Green India)-

(क) युवाओं द्वारा पर्यावरणीय जागरूकता फैलाने में योगदान : भारत जैसे विकासशील देश में पर्यावरणीय समस्याओं से निपटने के लिए जागरूकता सबसे पहली आवश्यकता है। युवा वर्ग सामाजिक, सांस्कृतिक और शैक्षणिक स्तर पर जागरूकता फैलाने में प्रमुख भूमिका निभाता है। विद्यालयों, महाविद्यालयों और विश्वविद्यालयों में 'इको क्लब' और 'एनएसएस' जैसी गतिविधियों के माध्यम से युवा पर्यावरण-संरक्षण के संदेश को समाज तक पहुँचाते हैं।

आज सोशल मीडिया के माध्यम से युवा पीढ़ी बड़ी संख्या में लोगों तक संदेश पहुँचाने में सक्षम है। जलवायु परिवर्तन, प्रदूषण, प्लास्टिक मुक्त भारत और वृक्षारोपण जैसे अभियानों में युवाओं की सक्रियता से समाज के विभिन्न वर्गों में जागरूकता बढ़ी है।

उदाहरण के लिए, **प्लास्टिक मुक्त अभियान** में कॉलेज छात्रों द्वारा नुक्कड़ नाटक, रैली और डिजिटल पोस्टर बनाए गए, जिनका प्रभाव ग्रामीण और शहरी दोनों क्षेत्रों में देखा गया। इसी प्रकार, **विश्व पर्यावरण दिवस** और **पृथ्वी दिवस** के अवसर पर युवाओं की सक्रिय भागीदारी से सामूहिक चेतना का निर्माण होता है।

इस प्रकार यह कहा जा सकता है कि युवाओं के उत्साह, ऊर्जा और नवीन सोच के कारण पर्यावरणीय जागरूकता फैलाने में उनका योगदान अत्यंत महत्वपूर्ण है।

(ख) शिक्षा और अनुसंधान में युवा शक्ति-पर्यावरण संरक्षण और सतत विकास की दिशा में शिक्षा की भूमिका आधारभूत है। युवाओं को विद्यालय और विश्वविद्यालय स्तर पर पर्यावरण शिक्षा दी जाती है, जिससे उनमें संरक्षण की दृष्टि विकसित होती है।

भारतीय उच्च शिक्षा संस्थानों में **पर्यावरण अध्ययन (Environmental Studies)** को

अनिवार्य विषय के रूप में शामिल किया गया है। इसके माध्यम से छात्र न केवल सैद्धांतिक ज्ञान प्राप्त करते हैं, बल्कि फील्ड सर्वे, वृक्षारोपण, स्वच्छता अभियान जैसी व्यावहारिक गतिविधियों में भी भाग लेते हैं। युवा शोधार्थी पर्यावरणीय समस्याओं के समाधान हेतु नए विचार और प्रयोग प्रस्तुत करते हैं। उदाहरण के लिए, नवीकरणीय ऊर्जा स्रोतों (सौर ऊर्जा, पवन ऊर्जा) पर युवाओं द्वारा किए गए शोध से हरित प्रौद्योगिकी को बढ़ावा मिला है। इसी प्रकार, जल संरक्षण हेतु रेन वॉटर हार्वेस्टिंग तकनीक के विकास और प्रचार-प्रसार में युवाओं का योगदान सराहनीय है। इसके अतिरिक्त, ग्रामीण क्षेत्रों में शिक्षित युवाओं द्वारा समुदाय को **पारंपरिक जल स्रोतों** (कुएँ, तालाब, बावड़ी) के पुनर्जीवन की प्रेरणा देना भी एक उल्लेखनीय पहल है।

इस प्रकार, शिक्षा और अनुसंधान के क्षेत्र में युवा वर्ग पर्यावरणीय ज्ञान के संवाहक तथा नवाचार के सृजक दोनों के रूप में कार्य करता है।

(ग) हरित प्रौद्योगिकी और नवाचार : युवाओं का सबसे बड़ा योगदान हरित प्रौद्योगिकी और नवाचार के क्षेत्र में देखने को मिलता है। आधुनिक शिक्षा, विज्ञान और तकनीकी ज्ञान से संपन्न युवा पारंपरिक तरीकों की बजाय टिकाऊ (Sustainable) विकल्प प्रस्तुत कर रहे हैं।

- **नवीन आविष्कार:** सौर पैनल, बायोगैस संयंत्र, पवन ऊर्जा टरबाइन, वर्षा जल संचयन प्रणाली, ई-वाहन, और कचरे से ऊर्जा (Waste-to-Energy) जैसे नवाचारों में युवा अग्रणी भूमिका निभा रहे हैं।
- **स्टार्टअप संस्कृति:** भारत में अनेक युवा उद्यमियों ने ग्रीन स्टार्टअप्स स्थापित किए हैं, जो प्रदूषण कम करने, पुनर्चक्रण बढ़ाने और स्वच्छ ऊर्जा को बढ़ावा देने पर कार्यरत हैं।
- **विश्वविद्यालय स्तर पर पहल:** इंजीनियरिंग और विज्ञान के छात्रों ने 'ग्रीन प्रोजेक्ट्स' विकसित

किए हैं, जिनका उपयोग ग्रामीण क्षेत्रों में ऊर्जा संकट और शहरी क्षेत्रों में प्रदूषण की समस्या को हल करने के लिए किया जा सकता है। युवाओं की नवोन्मेषी सोच और तकनीकी दक्षता भारत को हरित अर्थव्यवस्था की ओर ले जा सकती है।

(घ) पर्यावरणीय आंदोलनों और अभियानों में भूमिका- भारतीय युवाओं ने समय-समय पर पर्यावरणीय आंदोलनों और अभियानों को नई दिशा दी है।

- **ऐतिहासिक आंदोलनों में भूमिका:** *चिपको आंदोलन* और *नर्मदा बचाओ आंदोलन* जैसे अभियानों में युवाओं की सक्रिय भागीदारी रही।
- **वर्तमान पहल:** स्वच्छ भारत अभियान, प्लास्टिक फ्री इंडिया और युवा पृथ्वी सेना जैसी मुहिमों में लाखों युवाओं ने सक्रिय योगदान दिया।
- **स्वयंसेवी संगठन:** युवाओं ने *नेहरू युवा केंद्र* संगठन और नेशनल सर्विस स्कीम (NSS) के माध्यम से वृक्षारोपण, स्वच्छता अभियान और नदी संरक्षण कार्यक्रमों को सफल बनाया। युवाओं की ऊर्जा और प्रतिबद्धता इन आंदोलनों को जन-आंदोलन का रूप देती है।

(ङ) नीति-निर्माण और निर्णय प्रक्रिया में सहभागिता- युवाओं की नीतिगत भागीदारी सतत विकास के लिए अनिवार्य है।

- **स्थानीय स्तर पर सहभागिता:** पंचायतों और नगर निकायों में युवा सदस्य पर्यावरणीय योजनाओं के निर्माण और निगरानी में योगदान दे रहे हैं।
- **राष्ट्रीय व वैश्विक स्तर पर योगदान:** युवा प्रतिनिधि *संयुक्त राष्ट्र जलवायु सम्मेलन (COP)* और ग्लोबल यूथ क्लाइमेट समिट जैसे मंचों पर भारत की आवाज़ उठाते हैं।
- **प्रौद्योगिकी आधारित योगदान:** GIS, ड्रोन सर्वे और डेटा एनालिटिक्स के माध्यम से युवा नीति-निर्माताओं को ठोस साक्ष्य उपलब्ध कराते हैं।

- **संस्थागत पहल:** 'युवा जलवायु परिषद' जैसी संस्थाओं की स्थापना से युवाओं की नीति-निर्माण में भूमिका और मजबूत की जा सकती है।

(च) ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों में युवा नेतृत्व-

ग्रामीण और शहरी दोनों ही परिप्रेक्ष्य में युवाओं की भूमिका महत्वपूर्ण है।

- **ग्रामीण क्षेत्रों में:**
 - किसान परिवारों के युवा जैविक खेती, पारंपरिक बीजों का संरक्षण और जल-संरक्षण तकनीकों को बढ़ावा दे रहे हैं।
 - ग्रामीण स्तर पर *जल स्वराज* आंदोलन और ग्राम हरियाली अभियान युवाओं की सक्रियता का परिणाम हैं।
- **शहरी क्षेत्रों में:**
 - कॉलेज और विश्वविद्यालयों के युवा 'ग्रीन क्लब' बनाकर प्रदूषण नियंत्रण, कचरा प्रबंधन और ईको-फ्रेंडली लाइफस्टाइल को बढ़ावा दे रहे हैं।
 - 'कार-फ्री डे', 'साइकिल टू वर्क' और 'अर्बन गार्डनिंग' जैसी पहलें शहरी युवाओं द्वारा चलाई जा रही हैं।

इस प्रकार ग्रामीण युवा प्रकृति आधारित समाधान देते हैं, जबकि शहरी युवा तकनीक आधारित विकल्प प्रस्तुत करते हैं।

(छ) डिजिटल अभियान और सोशल मीडिया का प्रभाव- आज की पीढ़ी डिजिटल युग की संतान है। सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म ने युवाओं को वैश्विक स्तर पर पर्यावरणीय संवाद का अवसर दिया है।

- **ऑनलाइन अभियान:** ट्विटर, फेसबुक, इंस्टाग्राम और यूट्यूब पर *Fridays For Future*, *Beat Plastic Pollution* और *Climate Action* जैसे अभियानों में युवाओं की व्यापक भागीदारी है।
- **जागरूकता फैलाना:** छोटे-छोटे वीडियो, ब्लॉग, पॉडकास्ट और पोस्टर के माध्यम से युवा पर्यावरणीय शिक्षा को जन-जन तक पहुंचाते हैं।

- **डिजिटल आंदोलन का असर:** कई बार सोशल मीडिया पर चलाए गए अभियानों ने नीतिगत फैसलों को प्रभावित किया है। उदाहरणस्वरूप, सिंगल-यूज प्लास्टिक पर प्रतिबंध की मांग युवाओं ने ऑनलाइन आंदोलन से प्रबल की।
- **नेटवर्किंग और वैश्विक जुड़ाव:** सोशल मीडिया ने भारतीय युवाओं को वैश्विक पर्यावरण कार्यकर्ताओं से जोड़ दिया है, जिससे अनुभवों और रणनीतियों का आदान-प्रदान संभव हुआ है।

इस प्रकार स्पष्ट है कि युवाओं का योगदान केवल सहायक नहीं, बल्कि नेतृत्वकारी है।

निष्कर्ष (Conclusion) : भारत के निर्माण में युवा सदैव परिवर्तन के संवाहक रहे हैं। आज के समय में “हरित भारत” का सपना केवल सरकारी योजनाओं या अंतर्राष्ट्रीय समझौतों से ही साकार नहीं हो सकता, बल्कि इसके लिए समाज के हर वर्ग, विशेषकर युवाओं की सक्रिय भागीदारी आवश्यक है। इस शोधपत्र के माध्यम से यह स्पष्ट हुआ कि भारत के पास एक विशाल **युवा जनसंख्या** (youth dividend) है, जो न केवल श्रमशक्ति और तकनीकी दक्षता से परिपूर्ण है, बल्कि रचनात्मकता, नेतृत्व क्षमता और नवाचार की भावना से भी संपन्न है। युवाओं की भागीदारी विभिन्न स्तरों पर दिखाई देती है-

- **जागरूकता:** स्कूल, कॉलेज और विश्वविद्यालयों में पर्यावरण-शिक्षा तथा जागरूकता कार्यक्रमों के माध्यम से युवा वृक्षारोपण, स्वच्छता, जल-संरक्षण और ऊर्जा बचत जैसे अभियानों में सक्रिय रूप से हिस्सा लेते हैं।
- **शोध और शिक्षा:** उच्च शिक्षा संस्थानों में हरित तकनीक, अक्षय ऊर्जा, अपशिष्ट प्रबंधन तथा सतत विकास पर शोध कार्यों में युवा शोधार्थियों का योगदान उल्लेखनीय है।
- **हरित प्रौद्योगिकी:** स्टार्टअप्स और इनोवेशन हब्स के माध्यम से युवा सौर ऊर्जा, इलेक्ट्रिक वाहन,

जैविक खेती और ग्रीन आर्किटेक्चर जैसी प्रगतिशील तकनीकों विकसित कर रहे हैं।

- **आंदोलन:** युवा वर्ग ने “चिपको आंदोलन”, “नर्मदा बचाओ आंदोलन” से लेकर आधुनिक “Fridays for Future” जैसे अभियानों में केंद्रीय भूमिका निभाई है।
- **नीति-निर्माण:** जलवायु परिवर्तन पर राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलनों में भारतीय युवा प्रतिनिधियों ने अपनी आवाज़ बुलंद की है, जिससे नीति-निर्माण पर सीधा प्रभाव पड़ा है।
- **ग्रामीण और शहरी नेतृत्व:** गाँवों में स्वच्छता और जल-संरक्षण के अभियानों से लेकर शहरों में प्रदूषण नियंत्रण और प्लास्टिक मुक्त पहल तक, युवा संगठन परिवर्तन के वाहक बने हैं।
- **डिजिटल अभियान:** सोशल मीडिया और डिजिटल प्लेटफॉर्म ने युवाओं को पर्यावरणीय चेतना फैलाने, आंदोलनों को गति देने और वैश्विक नेटवर्किंग में सक्रिय बनाया है।

इन सभी पहलुओं से यह निष्कर्ष निकलता है कि भारत में पर्यावरणीय चुनौतियों का समाधान केवल तकनीकी उपायों से संभव नहीं है, बल्कि सामाजिक और सांस्कृतिक दृष्टिकोण को भी साथ जोड़ना आवश्यक है। युवा इस समग्र दृष्टिकोण को अपनाने में सबसे सक्षम वर्ग हैं।

प्रमुख निष्कर्ष (Findings) :

1. भारतीय युवाओं के पास हरित भारत निर्माण हेतु **मानव संसाधन और तकनीकी क्षमता** दोनों उपलब्ध हैं।
2. पर्यावरणीय जागरूकता बढ़ाने में **शैक्षिक संस्थान और डिजिटल मीडिया** सर्वाधिक प्रभावी माध्यम हैं।
3. सतत विकास की दिशा में युवा **स्टार्टअप्स और नवाचार** भविष्य की सबसे बड़ी शक्ति हैं।
4. **नीति-निर्माण में युवाओं की सहभागिता** अभी भी सीमित है, लेकिन धीरे-धीरे बढ़ रही है।

5. ग्रामीण और शहरी दोनों क्षेत्रों में **युवा नेतृत्व** पर्यावरणीय अभियानों को जमीनी स्तर पर मजबूत बना रहा है।

“हरित भारत” केवल एक पर्यावरणीय अभियान नहीं, बल्कि आने वाली पीढ़ियों के लिए **सतत विकास और सुरक्षित जीवन** की गारंटी है। इस दिशा में युवाओं की भूमिका निर्णायक है। यदि शिक्षा, नीति और तकनीक को एक साथ जोड़कर युवाओं को सही दिशा और मंच प्रदान किया जाए, तो भारत न केवल अपने नागरिकों के लिए एक स्वच्छ और स्वस्थ पर्यावरण उपलब्ध करा सकेगा, बल्कि पूरे विश्व के लिए **हरित विकास का मॉडल** प्रस्तुत कर सकेगा। इस शोधपत्र के माध्यम से यह प्रतिपादित किया जा सकता है कि-

- हरित भारत के निर्माण में युवाओं की भूमिका केवल सहायक नहीं, बल्कि नेतृत्वकारी है।
- यदि युवाओं की ऊर्जा, नवाचार और नेतृत्व को सही दिशा दी जाए तो भारत जलवायु संकट, प्रदूषण और पर्यावरणीय असंतुलन जैसी चुनौतियों से सफलतापूर्वक मुकाबला कर सकता है।
- आने वाले वर्षों में युवा भारत को हरित भारत बनाने के सबसे बड़े **परिवर्तनकारी एजेंट (Change Agents)** सिद्ध होंगे।

संदर्भ (References) :

1. शर्मा, आर. (2022). युवाओं की भूमिका एवं पारिस्थितिकीय संरक्षण. नई दिल्ली: नेशनल पब्लिशिंग हाउस.
2. सिंह, पी., एवं वर्मा, ए. (2021). हरित भारत: युवा और सतत विकास. वाराणसी: गंगा प्रकाशन.
3. पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रालय (2023). स्टेट ऑफ इन्वायरनमेंट रिपोर्ट - भारत 2023. नई दिल्ली: भारत सरकार.
4. संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम। (2022). भारत में युवा और जलवायु कार्रवाई. यूएनडीपी रिपोर्ट.
5. कुमार, एस. (2020). ग्रीन टेक्नोलॉजीज़ और युवा नवाचार. जर्नल ऑफ इन्वायरनमेंटल स्टडीज़, 14(2), 115-128.
6. विश्व बैंक। (2021). यूथ इन एक्शन: एनवायरनमेंटल सस्टेनेबिलिटी इन साउथ एशिया. वॉशिंगटन, डी.सी.: विश्व बैंक समूह.
7. पांडेय, एम. (2022). सामाजिक आंदोलन और युवाओं की हरित भूमिकाएँ. जयपुर: राजस्थान हिंदी ग्रंथ अकादमी.
8. अंतर-सरकारी पैनल ऑन क्लाइमेट चेंज (2021). क्लाइमेट चेंज 2021: द फिजिकल साइंस बेसिस. जेनेवा: आईपीसीसी.
9. मिश्रा, के. (2023). डिजिटल मीडिया और हरित चेतना: युवाओं का योगदान. जर्नल ऑफ मास कम्युनिकेशन रिसर्च, 11(3), 55-72.

•